A Newsletter of Maitree Jankalyan Samiti

मैत्री समूह

Chirping Sparrow

Year - 11, Issue - 2

छोड़ घोंसला बाहर आया,
देखी डालें, देखे पात,
और सुनी जो पत्ते हिलमिल,
करते हैं आपस में बात,
माँ, क्या मुझको उड़ना आया ?
''नहीं चुरूगन, तू भरमाया''

डाली से डाली पर पहुँचा,
देखी कलियाँ, देखे फूल,
ऊपर उठ कर फुनगी जानी,
नीचे झुक कर जाना मूल,
माँ, क्या मुझको उड़ना आया ?
''नहीं चुरूगन तू भरमाया''

कच्चे-पक्के फल पहचाने,
खाए और गिराए काट,
खाने-गाने के सब साथी,
देख रहे हैं मेरी बाट,
माँ, क्या मुझको उड़ना आया ?
''नहीं चुरूगन तू भरमाया''

उस तरू से इस तरू पर आता,
जाता हूँ धरती की ओर,
दाना कोई कहीं पड़ा हो
चुन लाता हूँ ठोक-ठठोर,
माँ, क्या मुझको उड़ना आया ?
''नहीं चुरूगन तू भरमाया''

मैं नीले अज्ञात गगन की
सुनता हूँ अनिवार पुकार
कोई अंदर से कहता है
उड़ जा, उड़ता जा पर मार,
माँ, क्या मुझको उड़ना आया ?
''आज सफल हैं तेरे डैने
आज सफल है तेरी काया''

– हरिवंशराय बच्चन

PRIDE OF SOCIETY

डॉ. जयकुमार जलज

2 अक्टूबर 1934 को ललितपुर, उत्तरप्रदेश में जन्मे डॉ. जयकुमार जलज ने इलाहाबाद विश्वविद्यालय से एम. ए. किया। विक्रम विश्वविद्यालय से पी.एच.डी. की। सन् 1961–62 में इलाहाबाद विश्वविद्यालय में सहायक प्राध्यापक रहे। मध्यप्रदेश शासन के उच्च शिक्षा विभाग में अनेकों महाविद्यालयों में सहायक प्राध्यापक एवं रतलाम के शासकीय स्नातकोत्तर महाविद्यालय में प्राध्यापक एवं विभागाध्यक्ष रहे और 1983 से 1994 में सेवा निवृत्ति तक प्राचार्य रहे। वर्तमान में स्वतंत्र लेखन कार्य में रत हैं। प्राचार्य रहते हुये भी डॉ. जलज ने न कक्षा अध्यापन से विराम लिया न शोध निर्देशन से। उनके निर्देशन में 11 छात्रों ने पी.एच.डी. प्राप्त की। आप सूरज सी आस्था (कविताएँ, 1958), संस्कृत नाट्यशास्त्र : एक पुनर्विचार (शोध और समीक्षा, 1962), ध्वनि और ध्वनिग्राम शास्त्र (भाषा शास्त्र, 1962), संस्कृत और हिन्दी नाटक : रचना एवं रंग कर्म (शोध और समीक्षा, 1985, 2000), भगवान महावीर स्वामी का बुनियादी चिन्तन (2002, अब तक 36 संस्करण), किनारे से धार तक (जलज की कविताएँ : संचयन, 2013), आदि पुस्तकों के लेखक हैं। आपको मध्यप्रदेश शासन के कामताप्रसाद गुरु, विश्वनाथ (1967) एवं भोज पुरस्कार (1985) से, हिन्दी साहित्य सम्मेलन प्रयाग की सारस्वत उपाधि (1998) से, मध्यप्रदेश लेखक संघ के सर्वोच्च अलंकरण अक्षर आदित्य (2006) और श्रुत सेवा निधि न्यास फिरोजाबाद के आचार्य महावीरकीर्ति अलंकरण (2012) से सम्मानित किया गया है।

डॉ. जलज ने रत्नकरण्ड श्रावकाचार, समाधितन्त्र, इष्टोपदेश, तत्त्वार्थसूत्र, ध्यानस्तव, अट्ठपाहुड, ध्यानशतक, द्रव्यसंग्रह, रयणसार, समयसार, प्रवचनसार, परमात्मप्रकाश और योगसार आदि का हिन्दी में अनुवाद किया।

jaykumarjalaj@yahoo.com

YOUNG ACHIEVERS

Yogendra R Jain
Selection in UPSC Preliminary 2013
Current: Manager at Dr. Reddy's, Hyderabad
MBA (SCHMRD, Pune)
YJA Topper 2001

Nishtha Jain
Admission in IIMK 95.1 Percentile
NTPC Assitant Manager
Gold Medalist, B.Tech NIT Kurukshetra

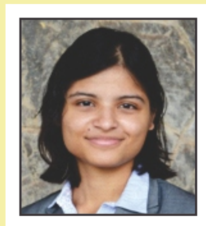

Bhavya D. Shah
Admission in IIM K
3.34/4.00 GPA, BBM MG University

Surbhi Kothari
Admission in IIMK 95.1 Percentile
8.7 GPA, B. Tech
(Nirma Institute of Technology)

Mitali Jain
Admission in IIMK 98.4 Percentile
8.7 GPA B. Tech
(Nirma Institute of Technology)

Naman Gangwal
CA Final AIR 47 and CA IPC AIR 48
Internship at BMR & Associates

Chirping Sparrow
Year - 11, Issue - 2

Chirping Sparrow is published by
MAITREE JANKALYAN SAMITI
Post Box No. 15, Vidisha, Madhya Pradesh - 464001
E-mail : maitreesamooh@hotmail.com, samooh.maitree@gmail.com
Website : www.maitreesamooh.com Mobile: 94254-24984
http://maitreesamooh.blogspot.com

It is circulated to all Young Jaina Awardees and friends of
Maitree Jankalyan Samiti.

दीपावली कैसे मनायें

कार्तिक कृष्णा अमावस्या तिथि को दीपावली वाले दिन दो महत्त्वपूर्ण घटनाएं हुई थीं। प्रातः काल की बेला में भगवान महावीर का निर्वाण हुआ और सायंकाल में गणधर भगवान को केवलज्ञान की प्राप्ति हुई। अतः दीपावली आत्म कल्याण के साथ लोक कल्याण का भी पर्व है। साथ–साथ ये पर्व रोशनी, और अन्तरंग और बहिरंग दोनों की स्वच्छता का भी प्रतीक है। इस दिन महावीर संवत की शुरूआत हुई थी, जो कि वीर संवत या जैन नया वर्ष के नाम से भी जाना जाता है जो कार्तिक सुदी एकम को प्रारम्भ हुआ था। आगामी वर्ष वीर संवत 2540 के नाम से जाना जाएगा जो नवम्बर 2013 में शुरू होगा। अतः जैन कैलेंडर पाश्चात्य कैलेंडर से 527 वर्ष पहले ही शुरू हो गया था। हमें इस बात का गर्व होना चाहिए कि 599BC में, महावीर भगवान का जन्म भारतीय इतिहास की प्रथम अभिलिखित घटना है।

प्रातः काल में भगवान महावीर के निर्वाण होने के कारण पूजन करके निर्वाण लाडू चढ़ाते हैं, और शाम को गौतम गणधर स्वामी को केवलज्ञान प्राप्ति के उल्लास में दीपक जलाते हैं। इस दिन हम सभी अपने घर में रंगोली बनाते हैं, सफाई करके विभिन्न तरीकों से घर सजाते हैं और मिठाई बनाते हैं। इस प्रकार सभी अपने–अपने तरीके से दीपावली का महापर्व खुशी से मनाते हैं। पर हमारे आसपास ही कई लोग ऐसे भी हैं जिन्हें इस दिन भी भोजन नहीं मिल पाता, वे जहाँ रहते हैं वहाँ रोशनी की भी व्यवस्था नहीं हो पाती, पहनने के लिए तन पर कपड़े भी नहीं होते। हमें उन लोगों के भी बारे में सोचकर उनके लिए भी ये दिन रोशनी से भर देना चाहिए। हम दीपावली कुछ नए तरीके से मनाने का सोच सकते हैं, जहाँ हम दूसरों के जीवन को भी उत्सव बना दें।

हम उनके लिए इस दिन मिठाई लेके जा सकते हैं, और उनकी झोपड़ी का अँधेरा दूर करने के लिए वहाँ दीपक जलाकर रख सकते हैं। दीवाली पर सर्दी की रात में ठण्ड में ठिठुरते लोगों पर कम्बल ढक सकते हैं। अनाथ बच्चों को मिठाई, कपड़े और खिलौने उपहार में दे सकते हैं। उनके साथ थोड़ा समय व्यतीत करके उन्हें आत्मीयता और खुशी का अनमोल अहसास दे सकते हैं। हमें इस पावन दिन पर अपने और सबके जीवन को प्रेम से भरकर उज्ज्वल बनाना चाहिए। आधुनिकता और आडम्बर के इस दौर में कई लोग दीपावली पर पटाखे भी चलाते हैं, जो कि एक हानिकारक परंपरा है। कितने ही लोग पटाखों पर कितना ही पैसा बर्बाद कर देते हैं, जो किसी जरूरतमंद व्यक्ति के जीवन में रोशनी ला सकता है। पटाखों के विषैले धुएँ से वातावरण प्रदूषित होता है और अनेक जीवों की हिंसा होती है। कितने ही कीड़े मकोड़े और छोटी चिड़िया आदि मर जाती हैं। हर साल कई लोग पटाखों से हुई दुर्घटना के कारण घायल भी हो जाते हैं। हमें स्वयं ऐसी परंपरा का त्याग करना चाहिए और अपने आगे की पीढ़ी को भी इस हिंसात्मक कृत्य से बचाना चाहिए। अगर हम स्वस्थ और पर्यावरण के प्रति एक संवेदनशील उत्सव मनाना चाहते हैं तो हमें निम्न बातों का ध्यान रखना चाहिए –

1. **पटाखों द्वारा प्रदूषण** : पटाखों के विषैले धुएँ से वातावरण प्रदूषित होता है और अनेक जीवों की हिंसा होती है। ध्वनि प्रदूषण से कितने ही कीड़े मकोड़े और छोटी चिड़िया आदि प्रभावित होते हैं।

2. **अत्यधिक उपभोक्तावाद** : ज्यादातर लोग दीवाली पर खरीदारी करने में विश्वास रखते हैं, जिससे प्रकृति पर अप्रत्यक्ष रूप से, लेकिन गहरा प्रभाव पड़ता है। जो भी चीजें हम इस्तेमाल करते हैं वे प्रकृति के अनवीकरणीय संसाधन (non renewable resources) से प्राप्त होती हैं, जिससे प्रकृति के इन अमूल्य संसाधनों का ह्रास हो रहा है। फिर जो प्लास्टिक आदि बेकार कचरा बच जाता है और इधर उधर फेंक दिया जाता है, वह भी बहुत नुकसानदायक है।

3. **बिजली की बर्बादी** : इन दिनों लोग सजावट आदि करते हैं, व्यापारी अपनी दुकानों में बहुत रोशनी इत्यादि करते हैं। जिससे बिजली की मांग बहुत बढ़ जाती है और बिजली की बर्बादी भी होती है। पुराने समय की दीपक जलाने की परंपरा इस आडम्बर से भिन्न एवं स्वस्थ परंपरा है जिसे हम अपना सकते है।

दीपावली के दिन हमें अपने अन्तरंग की बुराइयों को मिटाकर प्राणी मात्र के प्रति करूणा का भाव रखना चाहिए। इस दिन हम दीपक जलाते हैं तो विश्वास के दीपक जलाएं, पूजा करते हैं तो आस्था की पूजा करें, अपने घर की सजावट करते हैं तो सद्भावना की सजावट करें, गुणधानी अगर बाँटते हैं तो स्नेह की गुणधानी बाँटें, अनार चलाते हैं तो आशाओं के चलाएं, बंदनवार बाँधें, तो ज्ञान की बंदनवार बाँधें, द्वार अगर सजाएं तो विनय से सजाएं, पटाखे प्रसन्नता के फोड़ें, फुलझड़ी प्रेम की चलायें, कलश रखें तो परम्पराओं के रखें जिनपर श्रीफल संकल्प का हो और उस पर नैतिकता का स्वस्तिक बनाएं तो वास्तव में हम मुक्ति की आराधना कर सकते हैं और अपनी दीपावली सार्थक कर सकते हैं।

SELF EVALUATION

एक छोटा सा लड़का जो कि लगभग 11–12 वर्ष का रहा होगा, एक दवाई की दुकान में गया और उसके मालिक से एक फोन लगाने की आज्ञा ली। फिर उसने एक बड़ा सा बक्सा खिसकाया और उस पर चढ़ गया जिससे कि वह ऊपर रखे हुए फोन तक पहुँच सके। दुकान का मालिक चुपचाप उस लड़के की बातचीत सुनने लगा। बालक ने एक महिला को फोन मिलाया और बोला, ''क्या आप मुझे अपना बगीचा और लॉन काटने का काम दे सकती हैं?''

इस पर महिला फोन के दूसरी ओर से बोली, ''मेरे लॉन की कटाई का काम पहले से कोई कर रहा है।'' बालक बोला, ''किन्तु मैं आपके लॉन की कटाई का काम उससे आधे दाम पर करने के लिए तैयार हूँ।''

''जो लड़का मेरे लॉन की कटाई का काम कर रहा है, मैं उसके काम से पूरी तरह संतुष्ट हूँ'', महिला ने जबाव दिया।

इस पर वह बालक और अधिक निश्चय पूर्वक बोला, ''मैं आपके लॉन के चारों ओर का रास्ता भी साफ़ कर दिया करूँगा और आप के घर के बाहर के शीशे भी साफ़ कर दिया करूंगा।''

महिला बोली, ''नहीं, मुझे किसी की आवश्यकता नहीं है, धन्यवाद।'', यह सुन कर वह बालक मुस्कुराया और उसने फोन रख दिया।

दुकान का मालिक जो कि उस लड़के की बातचीत सुन रहा था, उसकी ओर आया और बोला, ''बेटा, मुझे तुम्हारा आत्मविश्वास और सकारात्मक दृष्टिकोण देख कर बहुत अच्छा लगा। मुझे तुम्हें नौकरी पर रख कर वास्तव में खुशी होगी। क्या तुम मेरे लिए काम करना पसंद करोगे?'' इस पर वह बालक बोला, ''धन्यवाद, पर मैं कोई नौकरी नहीं करना चाहता।''

दुकान का मालिक बोला, ''लेकिन, बेटा तुम तो अभी–अभी फोन पर नौकरी के लिए गिड़गिड़ा रहे थे।''

इस बार बालक बोला, ''नहीं महोदय, मैं तो केवल अपनी कार्यकुशलता का परीक्षण कर रहा था, दरअसल, जिस महिला को मैंने फोन किया था मैं उसी के लिए कार्य करता हूँ।'' वह आगे बोला, ''और, उससे बात करने के पश्चात यह जान कर मुझे बहुत अधिक आत्मसंतोष मिल रहा है कि वह महिला मेरे कार्य से पूर्ण रूप से संतुष्ट है।''

क्या हम लोग इस छोटे से बालक से आत्म निरीक्षण करने की प्रेरणा प्राप्त नहीं कर सकते हैं?

आओ चलें तीर्थ वंदना को

इस वर्ग पहेली में उत्तर पूर्वी भारत के हरियाणा, उत्तरांचल, उत्तर प्रदेश, बिहार, झारखण्ड, और ओडिशा राज्यों में स्थित 47 तीर्थ स्थलों के नाम छिपे हैं, जो आड़े , खड़े और तिरछे वर्गों में हैं। कृपया उन्हें ढूढ़कर पहेली में सुस्पष्ट अंकित करें । सही जवाब की प्रतियों में से तीन प्रतियों को Lucky Draw द्वारा चुना जाएगा। अपनी उत्तरपुस्तिका को मैत्री समूह के पते पर दिनांक 28.02.2014 तक भेजें।

नाम ______________________

उम्र ______________________

पता ______________________

____

____

फोन नं. ______________________

ई-मैल ______________________

प्र	या	ग	मं	ग	ला	य	त	न	न	वा	दा	शौ	ए
भा	आ	अ	व	सि	मा	ह	स्ति	ना	पु	र	री	चौ	त्मा
स	रा	यो	ह	द्धां	ड	सू	गु	णा	वा	पु	ला	रा	द
गि	म्भे	ध्या	ल	त	ल	क	ह	मी	र	स	हां	सी	पु
री	खो	द	ना	क्षे	लि	म्पि	स	ब	क	र	गु	वां	र
का	क	न्दी	शि	त्र	त	ला	ट्टे	द	डा	रा	ब	ब	का
अ	ष्टा	प	द	ख	पु	श्व	कै	ला	श	गां	न	द्री	री
हि	श्रा	व	स्ती	ण्ड	र	को	म	ह	ल	का	व	ना	टो
क्षे	सि	कौ	उ	गि	कु	ल्हु	ऋ	फ़ि	दे	स	बा	थ	र
त्र	रो	शा	द	री	ण्ड	आ	ष	रो	व	न	न	पा	न
का	न	म्बी	य	म	ल	प	भा	ज़ा	ग	ही	पु	वा	शा
म	न्दा	र	गि	री	पु	हा	चं	बा	ढ़	ब	र	गि	न्ति
रा	नी	ला	री	क	र	ड़	ल	द	च	म्पा	पु	र	गि
त्रि	लो	क	पु	र	पा	वा	पु	र	रा	ज	गृ	ही	र

US FOOD GIANTS TURN VEGETARIAN

Times of India recently ran a headline - US food giants turn vegetarian in Gujarat. The news article further reported - Emperor Akbar turned a vegetarian in Ahmedabad and now, several global fast food giants are turning vegetarian in the city by overhauling their menu to include vegetarian cuisine in the vegetarian heartland of Gujarat. In Gujarat, global restaurant chains like Subway, KFC and McDonalds are not just experimenting with vegetarian food but also offering Jain food. In a first, American restaurant franchise Subway has opened a Jain counter at its first all-veg outlet in Ahmedabad.

This was surprising because the outlets once known for serving exclusively meat products, are now serving the Jain food! While one could argue this could be just due to the fact that there are a lot of Jains in Gujarat, but of late many people in US and Europe are turning to the pure vegetarian style of living.

If we inquire, why we should be vegetarian, I have few reasons:
1) Every packet of chicken contains some of the poop with it
2) Eating meat can cause impotence
3) A vegetarian has 40% less chance of heart disease than a non-vegetarian (keeping smoke and alcohol aside)
4) Half of the water in US goes in upbringing of the animals to be slaughtered
5) The animals reared for others' food eat one-third of world's grains (I need not to say that if whole world becomes vegetarian, there will be no empty stomach)

Besides this I have some more reasons which do not have any logic:
1) No animal deserves to die just for your taste
2) Because every living being on this planet has an equal right to live
3) It takes only a small person to kill a defenceless animal
4) Because it is not fair to kill others for your food when you have options
5) Because a vegetarian saves on an average 80 animals per year

There are some people who consume egg and still want to convince themselves that they are vegetarian. It is difficult to accept the argument that since egg will not produce the chicken, so it should not be counted as non-vegetarian food. Will you eat an aborted zygote of human being (it is also not going to produce human)?

These 'vegetarian' eggs come from poultry farms. The farms have racks of hen piled over one another. So one hen's poop can easily be another's dinner. Since hens fight with their beak and might hurt fellow hens, so they are kept in dark (no sunlight). Thus they don't see each other and don't fight. They also don't get proper air. These hens get filled with the feelings of irritation and anguish. Because the purpose is to get their eggs and not their good upbringing, hens are fed wooden barks as food. Sometimes they are also fed fish powder, which is made up of leftovers of fishes. Many hens have deadly diseases because of these pathetic conditions. Needless to say, the diseases can easily get transferred to the eggs.

To sum it up, I think there is enough ground for us to not to blindly give up our vegetarian style of living. To love every living being is one of the main tenets of Jainism and vegetarian style of living is one such way of expressing our love towards animals.

Megha Jain and Saurabh Jain

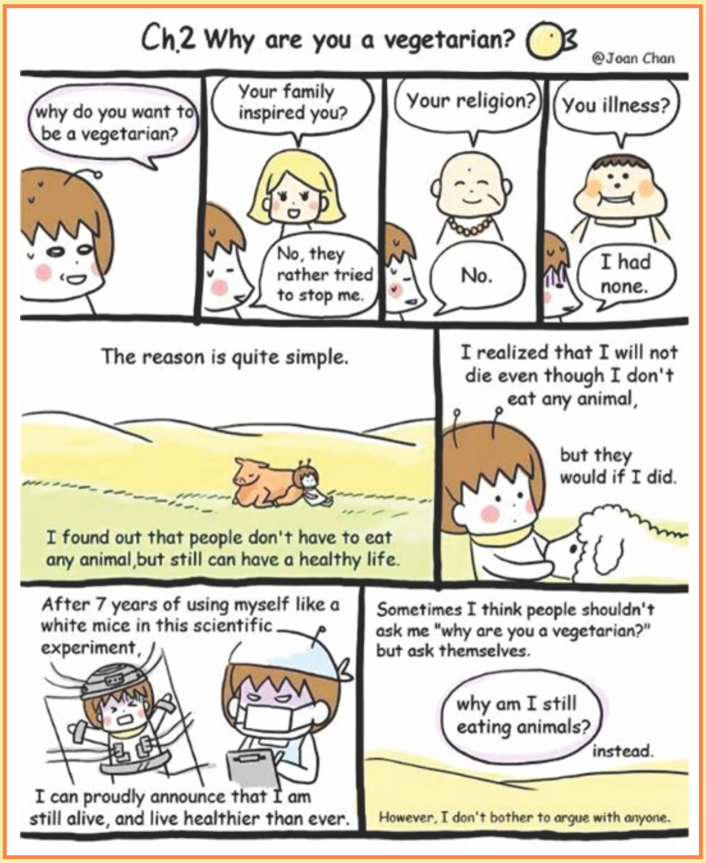

ELEPHANTS' HOME

Lalit Mohan (Courtesy Letters from Africa)

In the midst of the bustling metropolis that is Nairobi, there is the National Park Nairobi and adjoining is the Estate of the Late Mr. David Sheldrick which has been converted into an Orphanage for Baby Elephants. Run by his late wife, Dame Daphne Sheldrick, the place was started as a research center on elephants and matured into a haven for the unfortunate victims of Elephant Poaching, the babies that are left behind when the mums and the dads are killed for their ivory. A quick side note here, although the rest of the ladies in the herd care and provide for the orphaned children but mama elephants reserve their milk only for their own offspring. Now an elephant baby like any mammal is dependent completely on the mother's milk for survival. As a result the baby orphans ended up dying. The well intended efforts of the gentle Swahili speaking folk of Kenya were falling flat as well, as these guys were trying to use cow milk to feed them. Now what we need to understand here is cow milk is much thicker than the elephant milk and indigestible by the baby elephant calf. That is where years of work by Dame Daphne and her team came as a ray of hope. They with years of careful experimentation and trial & error have been able to develop an elephant milk substitute for baby elephants.

And thus was born the idea of the David Sheldrick Elephant Orphanage. 25 years and 130 orphans later, Dame Daphne who is 77 now is an authority on the subject and rightly called "Mama Elephant".

Elephants are unlike any other mammals - in the sense that they have full grown personalities just like us and yes they never forget. According to the keepers there are funny elephants, naughty elephants, mean elephants and romantic elephants as well.

Now the way Daphne and team have structured the program is, that the elephants once strong enough and weaned off the milk and ready to forage and live are slowly re-acclimatized to the wild and they go on to live in the wild with their own herds or even go on to lead new herds. And guess who helps the new batches get used to the real world, the alumni of course. Yes, you read it correctly. Every year at graduation time, when the human keepers take the fresh graduates to the base camp near the forest for slow re-introduction to the wild, the previous batches are sure to make an appearance and infact take the guys out for a stroll in the wild bringing them back by evenings.

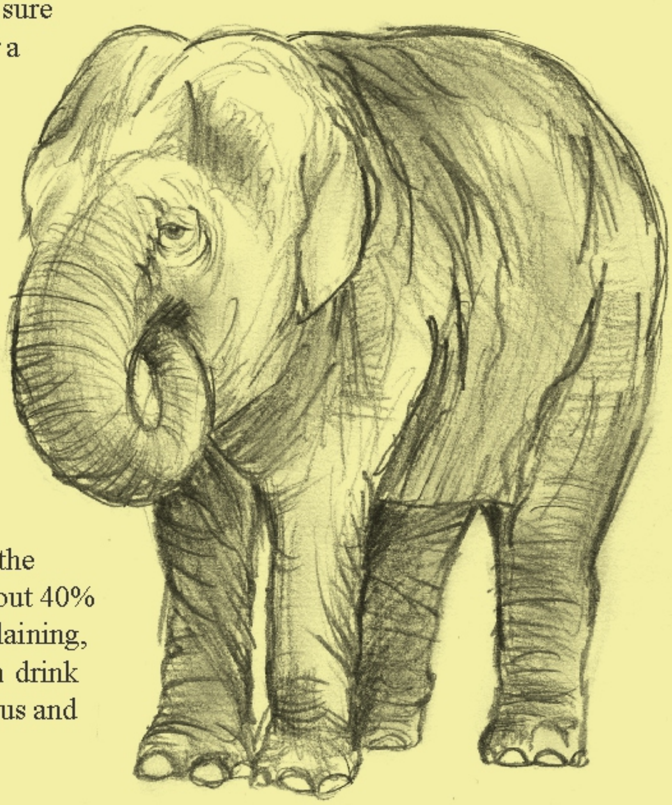

Another testimony to the fact of an Elephants memory, there have been multiple instances of full grown African Elephants returning back to the orphanage from the wild, covering hundreds of miles just to meet their keepers and show off their wives and babies to their keepers.

Another great thing when you visit the place is the one hour session every morning, when they bring the babies out for their daily bath and breakfast. The keepers tell their stories to huddled kids, tourists and visitors while the babies play around in the mud, drink from their bottles and eat the softer leaves. Considering these guys digest only about 40% of what they eat, they eat a lot. And we are not complaining, becasue it is a treat to watch. Especially to see them drink milk from their specially made bottles it's just precious and anyone who says it doesn't move them is lying!

लाइफ की समस्याएँ

एक प्रोफेसर ने अपने हाथ में पानी भरा एक ग्लास पकड़ते हुए क्लास शुरू की। उन्होंने उसे ऊपर उठा कर सभी छात्रों को दिखाया और पूछा, ''आपके हिसाब से ग्लास का वजन कितना होगा?''

"50gm ......100gm ......125gm ......" छात्रों ने उत्तर दिया।

''जब तक मैं इसका वजन ना कर लूँ मैं इसका सही वजन नहीं बता सकता।'' प्रोफेसर ने कहा, ''पर मेरा सवाल है –यदि मैं इस ग्लास को थोड़ी देर तक इसी तरह उठा कर पकड़े रहूँ तो क्या होगा ?''

''कुछ नहीं'', छात्रों ने कहा।

''अच्छा, अगर मैं इसे इसी तरह एक घंटे तक उठाये रहूँ तो क्या होगा?'', प्रोफेसर ने पूछा।

''आपका हाथ दर्द होने लगेगा'', एक छात्र ने कहा।

''तुम सही हो, अच्छा अगर मैं इसे इसी तरह पूरे दिन उठाये रहूँ तो क्या होगा?''
''आपका हाथ सुन्न हो सकता है, आपके muscles में भारी तनाव आ सकता है, लकवा मार सकता है और पक्का आपको hospital जाना पड़ सकता है।'', किसी छात्र ने कहा और बाकी सभी हंस पड़े।

''बहुत अच्छा, पर क्या इस दौरान ग्लास का वजन बदला?'', प्रोफेसर ने पूछा।

उत्तर आया...''नहीं।''

''तब भला हाथ में दर्द और मांसपेशियों में तनाव क्यों आया?''
छात्र अचरज में पड़ गए।
फिर प्रोफेसर ने पूछा – ''अब दर्द से निजात पाने के लिए मैं क्या करूँ?''
''ग्लास को नीचे रख दीजिए!'' एक छात्र ने कहा।
''बिल्कुल सही!'', प्रोफेसर ने कहा।

लाईफ की समस्याएं भी कुछ इसी तरह होती हैं। अगर इन्हें कुछ देर तक ही अपने दिमाग में रखें तब तक सब कुछ ठीक है। उनके बारे में ज्यादा देर सोचिये और आपको पीड़ा होने लगेगी और इन्हें और भी देर तक अपने दिमाग में रखिये और ये आपको paralyze करने लगेंगी और आप कुछ नहीं कर पायेंगे।

अपने जीवन में आने वाली चुनौतियों और समस्याओं के बारे में सोचना जरूरी है, पर उससे भी ज्यादा जरूरी है दिन के अंत में सोने जाने से पहले उन्हें नीचे रखना। इस तरह से, आप stressed नहीं रहेंगे, आप हर रोज़ मजबूती और ताजगी के साथ उठेंगे और सामने आने वाली किसी भी चुनौती का सामना कर सकेंगे।

- प्राण शर्मा

क्षमावाणी

कहाँ मनुष्य है जिसे कमी खली न प्यार की,
कहाँ मनुष्य है जिसे न भूल शूल-सी गड़ी
इसीलिए खड़ा रहा कि भूल तुम सुधार लो!

इसीलिए खड़ा रहा कि तुम मुझे पुकार लो।
पुकार कर दुलार लो, दुलार कर सुधार लो।

आपके प्रश्न

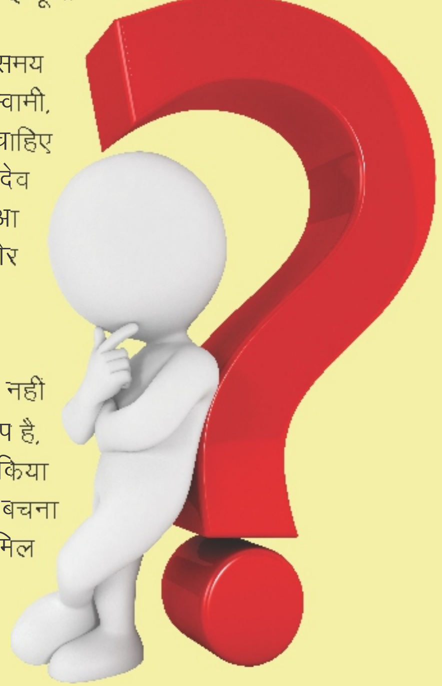

Q. सर्वप्रथम देव शास्त्र गुरू की पूजा के स्थान पर नव देवता, णमोकार महामंत्र या अन्य कोई पूजा कर सकते हैं ?

A. वैसे तो नित्य पूजा में सर्वप्रथम देव शास्त्र गुरू की पूजा ही बताई है। पर आपको अगर समय नहीं है तो देव शास्त्र गुरू का आह्वाहन करें और अर्घ्य चढ़ा दें और फिर इसके बाद महावीर स्वामी, नव देवता और कोई अन्य पूजा, जो करना हो, कर सकते हैं। लेकिन इतना तो करना ही चाहिए क्योंकि देव गुरू शास्त्र में सब आ गए। सब भगवान, सब कृत्रिम–अकृत्रिम जिनालय, ये सब देव में आ गए। इस पूजा में तीन कम नौ करोड़ मुनिराज और जिनवाणी, नव देवता इत्यादि सभी आ गए। तो देव गुरू शास्त्र का आह्वाहन करके अर्घ्य तो चढ़ाएं ही, फिर बाद में और पूजा करें और अगर समय हो तो ठाठ बाट से देव गुरू शास्त्र की पूजा के बाद ही अन्य पूजा करें।

Q. शादी ब्याह इत्यादि में buffet में खाने के लिए मना करने का उद्देश्य क्या है ?

A. मना करने का उद्देश्य यही है कि जिससे हमारी परंपरा बनी रहे क्योंकि हमारी ये परंपरा नही है। ये परंपरा पश्चिमी सभ्यता से आई है, हमारी original नहीं है। ये इसका बिगड़ा हुआ रूप है, जो वास्तविक रूप है वो कुछ और है और बहुत पवित्र है, लेकिन वर्तमान में नकल के रूप में किया जाने लगा, वो अत्यंत अपवित्र हो गया है, इसीलिए जहाँ तक हो सके अपने जीवन में इससे बचना चाहिए और दूसरे को भी ऐसी ही सलाह देनी चाहिए कि भैया इस तरह की प्रक्रिया में हम शामिल नहीं हों। एक से दो हो जाएँगे और दो से दो सौ हो जाएँगे तो अपनी बात का असर पड़ेगा। अकेला व्यक्ति निषेध करता भी है तो उसका कोई विशेष प्रभाव नहीं पड़ता है। यह प्रक्रिया थी तो अच्छी प्रक्रिया, लेकिन उसमें अब विकृतियाँ आ गयी हैं। Food handle करने वालों की कोई शुद्धि नहीं रहती, बनाने के स्थान की शुद्धि नहीं रहती, जो चीज बन रही है उसकी कोई शुद्धि नहीं रहती, इसीलिए इस प्रक्रिया में हमें शामिल नहीं होना है। जो टेबल कुर्सी पर बैठ कर परोस कर खिलाते हैं, वो buffet system नहीं कहलाएगा। Buffet वो कहलायेगा जिसमें अपने हाथ से और जगह जगह से उठा करके, counters से ले लेकर के खाते हैं, वो buffet system है। इसीलिए निषेध किया कि कई जगह भोजन रखा है, पानी उधर पिया और झूठे जा रहे हैं, उधर घूम रहे हैं सब में, और उठा–उठा कर के खा रहे हैं और फेक रहे हैं रोटियां और रात में खा रहे हैं, इसके लिए निषेध है। लेकिन किसी ने टेबल कुर्सी पर बैठ करके किसी ने परोस दिया तो बढ़िया से भोजन करिए, उसमें कोई दिक्कत नहीं, उसका कोई निषेध नहीं है। शुद्धि पूर्वक भोजन ग्रहण करने की कोशिश करनी चाहिए।

Q. सोलह कारण भावनाओं को हम भाद्रपद में ही क्यूँ याद करते हैं, ये भावनाएं क्या व्यक्ति जीवन भर नहीं भा सकता ?

A. क्या करें हमें फुर्सत ही नहीं है, अच्छी बातें याद करने के लिए, तो हमने दिन निश्चित कर लिए कि सोलहकारण मतलब सोलह दिन, लेकिन फिर उसके बाद हम याद ही नहीं करते। ऐसे ही दशलक्षण भी सिर्फ दस दिन, बाकी दिन कुछ नहीं। ऐसा नहीं है, दशलक्षण भी, हम पूरे जीवन भर भावना भा सकते हैं रोज। क्षमा भाव तो केवल एक ही दिन थोड़े ना रहना चाहिए, वो तो हमेशा रहना चाहिए। ऐसे ही विनयसम्पन्नता केवल एक ही दिन थोड़ी न रहनी चाहिए, वो तो हमेशा ही रहनी चाहिए। ऐसी ही दर्शनविशुद्धि भी हमेशा ही रहनी चाहिए, पूरे जीवन भर। पर फिर भी हमने कुछ दिन ऐसे बना लिए हैं जिनमें जरूर से उन चीजों की याद आए और वो हमेशा बनी रहे। इनकी पूजा भाद्रपद में विशेष रूप से होती है। वैसे तो वर्ष में तीन बार सोलहकारण भी आते हैं, दशलक्षण भी आते हैं, चार चार महीने के अन्तराल से। ये तो धर्म करने का बहाना है कि किसी तरह तो करें। वैसे तो आचार्य श्री कहते हैं की रोज़ ही पर्व का दिन है, कोई न कोई भगवान के गर्भ, जन्म, तप कल्याणक की तिथियाँ अगर देखो तो 120 तिथियाँ तो वो ही हो गयीं और दशलक्षण इत्यादि सारे व्रत अगर जोड़ के देखो, तो कोई भी दिन ऐसा खाली नहीं जाएगा जिस दिन कोई व्रत नहीं हो। अगर हम करना चाहें तो 365 दिन व्रत कर सकते हैं और नहीं है सामर्थ्य तो ऐसे व्रतों को रख दिया है कि उस दिन तो कम से कम हो ही जाए, उस दिन तो ऐसे भाव आ ही जाएँ, इस दृष्टि से है।

Q. अनायतन किसे कहते हैं ?

A. सच्चे देव, गुरू–शास्त्र को मानने वाले को आयतन कहते हैं, इसके अलावा सब जो हैं वो अनायतन कहलायेंगे।

Q. जिस वेदी पर अभिषेक किया जाता है, क्या उसी जगह पूजन करना चाहिए या अन्य वेदी पर भी कर सकते हैं ?

A. अगर हमने अभिषेक किया है, तो उस वेदी पर अर्घ्य जरूर चढ़ाएँगे। फिर बाद में दूसरी वेदी पर सुविधा है तो दूसरी पर भी पूजन कर सकते हैं। पर एक अर्घ्य तो अभिषेक के बाद जरूर चढ़ाना चाहिए, फिर पूजा कहीं भी कर सकते हैं।

यदि आपकी कोई शंका या प्रश्न है, तो हमें लिख भेजिये। मुनिश्री द्वारा उसका उत्तर दिया जाकर शंका का समाधान किया जायेगा।

SELF CONFIDENCE

The business executive was deep in debt and could see no way out. Creditors were closing in on him. Suppliers were demanding payment. He sat on the park bench, head in hands, wondering if anything could save his company from bankruptcy.

Suddenly an old man appeared before him. "I can see that something is troubling you", he said. After listening to the executive's woes, the old man said, "I believe I can help you." He asked the man his name, wrote out a cheque, and pushed it into his hand saying, "Take this money. Meet me here exactly one year from today, and you can pay me back at that time." Then he turned and disappeared as quickly as he had come.

The business executive saw in his hand a cheque for $500,000, signed by John D. Rockefeller, then one of the richest men in the world! "I can erase my financial worries in an instant!" he realized. But instead, the executive decided to put the uncashed cheque in his safe.

Just knowing it was there gave him the strength to work out a way to save his business. With renewed optimism, he negotiated better deals and extended terms of payment. He closed several large sales deals. Within a few months, he was out of debt and making money once again.

Exactly one year later, he returned to the park with the uncashed cheque. At the agreed-upon time, the old man appeared. But just as the executive was about to hand back the cheque and share his success story, a nurse came running up and grabbed the old man.

“I'm so glad I caught him!" she cried. "I hope he hasn't been bothering you. He's always escaping from the rest home and telling people he's John D. Rockefeller." And she led the old man away by the arm.

The astonished executive just stood there, stunned. All year long he'd been wheeling and dealing, buying and selling, convinced he had half a million dollars behind him. Suddenly, he realized that it wasn't the money, real or imagined, that had turned his life around. It was his newfound self-confidence that gave him the power to achieve anything he went after.

उपाधि

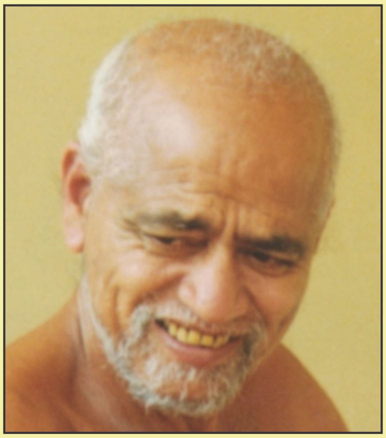

सागर में आचार्य महाराज के सान्निध्य में पहली बार षट्खंडागम वाचना–शिविर आयोजित हुआ। सभी ने खूब रूचि ली। लगभग सभी वयोवृद्ध और मर्मज्ञ विद्वान आए। जिन महान ग्रन्थों को आज तक दूर से ही माथा झुकाकर अपनी श्रद्धा सभी ने व्यक्त की थी, आज उन पवित्र ग्रन्थों को छूने, देखने, पढ़ने और सुनने का सौभाग्य मिला। यह जीवन की अपूर्व उपलब्धि थी।

वाचना की समापन बेला में सभी विद्वानों के परामर्श से नगर के प्रतिष्ठित एवं प्रबुद्ध नागरिकों के एक प्रतिनिधि मण्डल ने आचार्य महाराज के श्री–चरणों में निवेदन किया कि समूचे समाज की भावनाओं को देखते हुए आप 'चारित्र–चक्रवर्ती' पद को धारण करके हमें अनुगृहीत करें। सभी लोगों ने करतल ध्वनि के साथ अपना हर्ष व्यक्त किया। आचार्य महाराज मौन रहे। कोई प्रतिक्रिया तत्काल व्यक्त नहीं की।

थोड़ी देर बाद आचार्य महाराज का प्रवचन प्रारम्भ हुआ और प्रवचन के अंत मे उन्होंने कहा, ''पद–पद पर बहुपद मिलते हैं, पर वे दुख–पद आस्पद हैं। प्रेय यही बस एक निज–पद सकल गुणों का आस्पद है।'' आप सभी मुझे मुक्ति–पथ पर आगे बढ़ने दें और इन सभी पदों से मुक्त रखें। आप सभी के लिऐ मेरा यही आदेश, उपदेश और संदेश है।

सभा में सन्नाटा छा गया। सभी की आँखें पद के प्रति आचार्य महाराज की निस्पृहता देखकर हर्ष व विस्मय से भीग गईं।

सागर (अप्रैल १९८०)

निर्लिप्त

चिड़िया जानती है
तिनके जोड़ना
नीड़ बनाना
और बच्चों की
परवरिश करना

बड़े होकर
बच्चे बना लेते हैं
अपना अलग नीड़
वह सहज
स्वीकार लेती है
अकेले रहना

उसे नहीं होती
शिकायत
अपने-पराये किसी से भी
वह भूल जाती है
तमाम विपदाएँ
उसे याद रहता है सदा
गीत गाना/चहचहाना
असीम आकाश में उड़ना
और अपना चिड़िया होना।

Detached

The bird knows
how to gather twigs
for its nest.
It knows
how to raise its
younglings.

When the younglings
grow up
they make their separate
nests.

The bird does not complain
to any body.
The bird forgets all the past
moments of crisis.
It remembers
its own songs only.
It remembers singing;
and flying in the sky.
The bird only remembers
how to be a bird.

मुनि क्षमा सागर जी
Translated by Sunita Jain (Courtesy "Mukti")
मुक्ति से साभार

दोस्त

दोस्त, जो जीना सिखा दे!
दोस्त, जो आँसू भूला दे!

जो गम में साया हो,
जो हँसी साथ लाया हो!

जो थोड़ा सा नालायक हो,
लेकिन सुकून का परिचायक हो!

जो नाराज़ होकर भी गुस्सा नहीं,
जिसके बिना कोई किस्सा नहीं!

जिससे दिल शर्माता नहीं,
कुछ कहने से घबराता नहीं!

जिसके प्यार में कोई बंधन न हो,
जिस पर हक़ जताने में अड़चन न हो!

जो बिन बोले समझ ले दिल की बात,
जिसके होने से सुधर जाएँ सारे हालात!

अंकिता जैन, भोपाल

'हो न तू उदास...!!''

हो न तू उदास और हौसला न खो,
होते नहीं मायने बसंत के गर पतझड़ न हो!
बन जाओ बागवां अपने जीवन की बगिया के,
महका दो रंग बिरंगे फूल खुशियों के,
पर न होना उदास जब कांटें आयें,
होते नहीं मायने गुलाब के गर कांटे न हों!
समेट ले अब बिखरी खुशियाँ कुछ इस तरह,
पिरोये हों माला में फिर मोती जिस तरह,
पर न होना कभी उदास गर फिर वो धागा टूटे,
होते नहीं मायने बुलंदी के गर कमजोरी न हो!
दुनिया के इस सागर में सबको तेरा मान,
ना बांध रिश्तों को बंधन में, ना पराया जान,
मुस्कुरादे कुछ ऐसे कि वो किसी की खुशी बन जाये,
होते नहीं मायने मुस्कान के गर आँसूं ना हों!

अंकिता जैन, भोपाल

हर रोज

हर रोज़ जब
मेरी ऑफिस डेस्क से सटी
खिड़की का पर्दा चढ़ाता हूँ
कभी धूप, तो, कभी बादल
झाँकने लगते हैं
बगल की छत पर पड़े
दाने चुगते, काक
और कबूतर दिखते हैं
फिर पुराने होने की ताकीद देतीं
इमारतों की दीवारें
जैसे नज़र को रोक देती हैं
पर, थोड़ी-सी गर्दन घुमाने पर
पीपल के झाड़, उन पर लटके
कटे-पिटे उलझे से बिजली के तार
सड़क पर तो केवल होते हैं
सर, पाँव और हाथों में बेतार
सभी हलचलों में,
नज़र ठहर जाती है कहीं
मन कहीं खो जाता है
कानों पर पड़ती रहती हैं
कुछ आवाजें।
फिर एक हवा का झोंका
सूखे पत्ते मेरी डेस्क पर ले आता है
केलेंडर का पन्ना पलटा जाता है,
शायद, जिसे पलटना
मैं अक्सर भूल जाता हूँ।

- प्रियंक जैन, उज्जैन

महत्त्वपूर्ण चिट्ठी

खिड़की

एक बार की बात है, एक नवविवाहित जोड़ा किसी किराए के घर में रहने पहुँचा। अगली सुबह, जब वे नाश्ता कर रहे थे, तभी पत्नी ने खिड़की से देखा कि सामने वाली छत पर कुछ कपड़े फैले हैं, वह बोली – ''लगता है इन लोगों को कपड़े साफ़ करना भी नहीं आता.............. ज़रा देखो तो कितने मैले लग रहे हैं ?''

पति ने उसकी बात सुनी पर अधिक ध्यान नहीं दिया।
एक–दो दिन बाद फिर उसी जगह कुछ कपड़े फैले थे। पत्नी ने उन्हें देखते ही अपनी बात दोहरा दी.............''कब सीखेंगे ये लोग की कपड़े कैसे साफ़ करते हैं..............!!''
पति सुनता रहा इस बार भी उसने कुछ नहीं कहा।

पर अब तो ये आये दिन की बात हो गयी, जब भी पत्नी कपड़े फैले देखती भला–बुरा कहना शुरू हो जाती।

लगभग एक महीने बाद वे यूँ ही बैठ कर नाश्ता कर रहे थे। पत्नी ने हमेशा की तरह नजरें उठायीं और सामने वाली छत की तरफ देखा, ''अरे वाह, लगता है इन्हें अक्ल आ ही गयी..........आज तो कपड़े बिलकुल साफ़ दिख रहे हैं, जरूर किसी ने टोका होगा।''

पति बोला, ''नहीं उन्हें किसी ने नहीं टोका।''
''तुम्हें कैसे पता?'', पत्नी ने आश्चर्य से पूछा।

''आज मैं सुबह जल्दी उठ गया था और मैंने इस खिड़की पर लगे कांच को बाहर से साफ कर दिया, इसलिए तुम्हें कपड़े साफ़ नजर आ रहे हैं।'' पति ने बात पूरी की।

जिन्दगी में भी यही बात लागू होती है–बहुत बार हम दूसरों को कैसे देखते हैं ये इस पर निर्भर करता है कि हम खुद अन्दर से कितने साफ़ हैं। किसी के बारे में भला–बुरा कहने से पहले अपनी मनोस्थिति देख लेनी चाहिए और खुद से पूछना चाहिए कि क्या हम सामने वाले में कुछ बेहतर देखने के लिए तैयार हैं या अभी भी हमारी खिड़की गन्दी है।

BOOK-POST

Chirping Sparrow

Year - 11, Issue - 2

A Newsletter of Maitree Jankalyan Samiti

From
MAITREE SAMOOH
Post Box No. 15, Vidisha, Madhya Pradesh - 464001
E-mail : maitreesamooh@hotmail.com,
samooh.maitree@gmail.com
Website : www.maitreesamooh.com
http://maitreesamooh.blogspot.com
Mob.: 94254-24984

To, ____________________

____

____